A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

सितार वादन में गत शैली की उत्पत्ति एवं विकास

Dr. Gaurav Shukl
Assistant Professor, Sitar, Department of Music, Jai Narain Vyas University, Jodhpur

OPEN ACCESS

सारांश

सितार वाद्य का अपनी मधुरता के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में प्रमुख स्थान है। सितार वाद्य की उत्पत्ति के विषय में विद्वान एक मत नहीं है कुछ विद्वानों का मानना है कि प्राचीन कालीन त्रितंत्री वीणा से सितार का अविष्कार हुआ तो कुछ विद्वानों का मत है कि मध्यकाल में अमीर खुसरो , तो कुछ के मतानुसार खुसरो खां द्वारा इसका आविष्कार किया गया। जो भी हो लेकिन इस वाद्य के स्वतंत्र वादन का प्रारंभ मध्यकाल में सेनिया घराने के कलाकारों द्वारा किया गया। प्रारंभ में सितार एक संगत वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता था। बाद में धीरे-धीरे गत शैली का अविष्कार हुआ और वर्तमान समय में गत शैली के विभिन्न प्रकार प्रचलित और विकसित है। मैं अपने इस शोध पत्र के माध्यम से गत शैली की उत्पत्ति एवं विकास के सही क्रम को समझने का प्रयास करूंगा।

उद्देश्य - *प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का प्रमुख उद्देश्य 'सितार वादन में गत शैली की उत्पत्ति एवं विकास' विषय पर प्रकाश डालना एवं जन सामान्य तक जानकारी प्रेषित करना हैं।*

शोध प्रविधि- *द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तथ्यात्मक सामग्री संकलित कर अध्ययन किया गया हैं।*

मुख्य बिंदु- *सितार ,गत, शैली, बंदिश ,वाद्य*

भूमिका

वर्तमान समय में सितार वाद्य देश ही नहीं अभी तो पूरे विश्व में अपने मधुरता के कारण सर्वाधिक प्रचलित वाद्य है परंतु सितार वाद्य के आविष्कार के समय यह संगत वाद्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। सितार वाद्य गायक के न्यास स्वर को कायम रखने के लिए रिक्त पूरक में प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार संगत करने वाला सितार वादक गीत के स्वाभाविक ठहराव को भरता था और इस दौरान वह बाएं हाथ की उंगलियां न्यास स्वर पर, जहां गायक रुक गया है, रखना तथा दाएं हाथ से "दा रा" बजाता था। धीरे-धीरे सेनिया घराने के कलाकारों ने सितार वाद्य को विकसित किया और स्वतंत्र वादन का प्रारंभ किया। सितार में स्वतंत्र वादन के लिए गत शैली का निर्माण किया गया । गत शैली का निर्माण गायन पर आधारित था परंतु मिजराब के विशेष बोल प्रयोग करने के कारण यह गायन से स्वतंत्र प्रभाव छोड़ती थी इस प्रकार सितार को गायन से पृथक ले जाकर एक स्वतंत्र वाद्य के रूप में स्थापित किया गया। सितार वादन में सर्वप्रथम "फिरोजखानी गत" का आविष्कार हुआ। इस गत का निर्माण उस्ताद फिरोज खान 'अदारंग' ने किया था। इसके पश्चात समयानुसार अमीरखानी, मसीतखानी, रजाखानी आदि गतों का प्रचलन होता रहा जिसका वर्णन प्रस्तुत है-

फिरोजखानी गत- स्वतंत्र सितार वादन में "गत" शैली के अन्तर्गत सर्वप्रथम फिरोजखानी गत बजाया गया था। इस गत शैली के आविष्कारक फिरोज खान उर्फ "अदारंग" माने जाते हैं। उस समय प्रचलित ध्रुपद शैली के आधार पर इस गत के साथ चार ताल का वादन किया जाता था। फिरोज खान द्वारा आविष्कार होने के कारण इस गत शैली को फिरोजखानी बाज के नाम से भी जाना जाता है। इस गत के साथ पखवाज ताल वाद्य का प्रयोग होता था।

फिरोजखानी गत शैली की प्रमुख विशेषताएं: इस गत का विस्तार तीनों सप्तकों को में समान किया जाता था। गते बहुत लंबी होती थी। इसलिए इसमें अंतरा अलग से नहीं होता था। इस गत में तार परन मुख्य आधार था , लय और बोलों का काम इसमें अधिक प्रयोग किया जाता था परंतु यह गत अधिक दिनों तक प्रचलन में नहीं रहा।

अमीरखानी गत - इस गत का आविष्कार तानसेन के प्रपौत्र तथा निहाल सेन के भाई उस्ताद अमीर खान ने किया। इन्होंने मसीतखानी गत के आधे चक्र दिर दा दिर दा रा दा दा रा को मध्यलय में बजाने का प्रयास किया। यह गत मध्यकाल में प्रचलित थी। अमीरखानी गत अधिक समय तक प्रचार में नहीं रहा बाद में मसीतखानी गत जो इस गत से मिलती जुलती थी प्रचार में आ गई। इसके कारण अमीरखानी गत लुप्त हो गया।

मसीतखानी गत - इस गत का आविष्कार सेनिया घराने के कलाकार फिरोज़ खान 'अदारंग' के पुत्र मसीत खान ने किया था। मसीत खान ने फिरोज़खानी बाज में आ रही कठिनाइयों देखने हुए इस गत का आविष्कार किया था।

यह गत विलंबित लय में बजाई जाती थी। इस गत को 'दिल्ली बाज' और 'जयपुर बाज' भी कहा जाता हैं। मसीतखानी गत में चौगुन, अठगुन आदि लयकारियों की तान, तोड़े आदि बजाए जाने हैं। मसीत खान ने अपनी गतों को तीनताल में निबद्ध किया और दिर जो गत का प्रारंभिक स्थान था उसको 12 वीं मात्रा पर रखा। इस प्रकार इन गतों में 8 मात्रा का मुखड़ा रहता है। मसीत खान के पुत्र एवं पौत्र रहीम सेन व अमृतसेन उत्तम कोटि के सितार वादक हुए जिन्होंने इस 'बाज' का विकास किया । मसीतखानी गत के मिजराब के बोल निश्चित हैं जो इस प्रकार हैं - दिर दा दिर दा रा दा दा रा दिर दा दिर दा रा दा दा रा . यह गत सदैव तीनताल में बजाई जाती हैं तथा इसका मुखड़ा हमेशा 12 वीं मात्रा से ही उठाया जाता हैं। इस गत में सरसता होने के कारण श्रोतों तथा वादकों को यह गत बहुत पसंद आई और अन्य गतों की अपेक्षा इस गत का अधिक प्रचार -प्रसार हुआ।

रजाखानी गत - इस बाज का प्रचलन मसीत खान के शिष्य गुलाम रजा खां द्वारा किया गया, जो 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लखनवी या पूरबी बाज भी कहते हैं। रजाखानी गत तीन ताल में बजाई जाती हैं परंतु इसकी लय द्रुत रहती है, इसे द्रुत गत भी कहते हैं। इस गत में भी स्थाई अंतरा नामक दो भाग होते हैं। गत का प्रारंभ खाली से शुरू होता था। रजा खां द्वारा इस गत के निश्चित किए गए बोल दा दिर दिर दिर दा ऽर दा ऽर दा हैं परन्तु आज इसके मुखड़े तीन ताल की अलग - अलग मात्राओं से भी शुरू करते हैं, जैसे 5 वीं, 7वीं,9 वीं 13 वीं मात्रा एवं सम से भी शुरू कर सकते हैं। इस गत का वादन मसीतखानी गत के बाद किया जाता हैं। रजाखानी गत में बोलों के कटाव की विशेषता देखने को मिलती हैं। दा और रा इन बोलों से विभिन्न लयात्मक बोलों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। दिर दिर दा - रदा - र दा या दा रा दा - रदा दा रा दिर दिर दिर दा - रदा - र दा इस प्रकार बोलों का प्रयोग किया जाता हैं। इस बाज को बजाने वाले मसीतखानी बाज नहीं बजाते थे तथा एक से अधिक गतों का वादन करते थे, बाद में दोनों शैलियों का वादन एक साथ किया जाने लगा।

जाफरखानी बाज - इस गत के आविष्कारक उस्ताद हलीम जाफ़र खान हैं। आपने सितार की शिक्षा कुछ दिन उस्ताद बाबू खां से लिया इसके अतिरिक्त आपने अपने पिता तथा उस्ताद महबूब खान से भी सितार वादन सीखा। लगभग सभी बाज में सर्वप्रथम आलाप, जोड़, झाला क्रमशः बजाया जाता हैं किन्तु जाफरखानी बाज में गत के पूर्व उस्ताद हलीम जाफ़र खान ने झाले का समावेश नहीं किया था। इनके अनुसार झाले को राग के अंतिम चरण में ही बजाया जाना अधिक उपयुक्त हैं। जाफरखानी बाज की गतें पूर्णतः स्वर उद्योलन से भरा रहता हैं। उन्होंने जाफरखानी गत में 16 मात्राओं में भरन में बाएं हाथ के काम को बढ़ावा दिया है। इसमें एक मिजराब में चार, छः , आठ, बारह, सोलह स्वरों का भराव किया जाता हैं। इसमें खटका, मुरकी , जमजमा , चहक, और कणों को पर्दों पर एवं मीड के माध्यम से बजाया जाता हैं। इस शैली की प्रमुख विशेषता दोनों हाथों की तैयारी की स्पष्टता एवं माधुर्य का समन्वय है। इस बाज की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें बाएं हाथ का काम अधिक होता है तथा मिजराब के बोलों की प्रधानता रहती है। इस गत में 'दिर दिर ' के बोल कि प्रचुरता रहती हैं। प्रायः जाफरखानी गत की शुरुआत ही 'दिर दिर' के बोल से होती हैं।

सितारखानी गत - 19 वीं शताब्दी में एक अन्य गत शैली का जन्म हुआ। यह गत शैली स्थानीय लोक संस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न लखनऊ में ठुमरी गायकी से प्रभावित थी उस समय के वादकों ने अपने वाद्यों पर बजाने के लिए तत्कालीन प्रचलित ठुमरी अंग के आधार पर विभिन्न गतों का निर्माण किया। ये बंदिश द्रुत लय में निबद्ध होती थीं तथा जिस प्रकार का ठेका ठुमरी गायन के साथ बजाया जाता था उसी प्रकार का ठेका इन गतों के साथ बजाया जाता था। सितार के साथ यही ठेका 'सितारखानी' एवं 'पंजाबी ठेके' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इन गतों की लय माहौल को जमा देने वाली थी। प्रायः सितारखानी गते पीलू ,भैरवी ,काफी, झिंझोटी , खमाज, आदि संकीर्ण रागों में बजाई जाती थी। इस गत के विस्तार में भी ठुमरी अंग के साथ बोल बनाव होता रहा तथा छोटी -छोटी तानों का प्रयोग होता रहा। धीरे-धीरे गत शैली का विकास और अधिक बढ़ता गया ,जिसमें मुख्य रूप से मिश्रबानी गत , ख्याल शैली पर आधारित गत, तराना शैली पर आधारित गत , टप्पा शैली पर आधारित गत आज प्रचलन में है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि सेनिया घराने के कलाकारों का सितार वादन में गत शैली के विकास क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इस प्रकार सितार भारत ही नहीं पूरे विश्व में स्वतंत्र वाद्य के रूप में स्थापित हो चुका हैं इसका श्रेय गत शैली को ही जाता है।

संदर्भ

राय, वी. एस. सुदीप, जहाज ए सितार , कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.
भटनागर, रजनी, सितार वादन की शैलियां , कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2014
बाला,डॉ.किरण , सितार कादंबरी, प्रासंगिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012
ठाकुर, वंदना , तरबदार सितार की उत्पत्ति ,विकास एवं महत्व, कनिष्क प्रकाशन ,नई दिल्ली, सन 2009
शाह ,राजेश, सितार विज्ञान :शास्त्र एवं प्रयोग, कला प्रकाशन, वाराणसी, सन 2013